

पंजाब में युवाओं के जीवन में संगीत का महत्व: मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव**Yogesh Garg**

Research scholar

Banasthali Vidyapith (Rajasthan)

सारांश:

युवाओं के जीवन में संगीत एक गहरा प्रभाव छोड़ता है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह शोध पत्र उत्तर भारत के विशेष संदर्भ में संगीत की भूमिका का विश्लेषण करता है, जिसमें बिहार के लोक संगीत और समकालीन संगीत की विशेषता है। लेख में यह भी चर्चा की गई है कि कैसे संगीत मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने, सामुदायिक जुड़ाव को मजबूत करने और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में योगदान देता है।

पंजाब की सांस्कृतिक धरोहर और संगीत का इतिहास एक लंबे समय से जुड़े हुए हैं। पंजाब का संगीत, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं का दर्पण है। यह संगीत विभिन्न शैलियों जैसे लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत और भक्ति संगीत को समेटे हुए है। पंजाब में संगीत का विकास और विस्तार समय के साथ हुआ है, जहां परंपरागत संगीत शैलियाँ जैसे भांगड़ा, गिद्धा, क़व्वाली, और सूफी संगीत का समावेश हुआ है। यह शोध पत्र पंजाब में संगीत की उत्पत्ति, उसकी ऐतिहासिक परंपराएँ, विभिन्न शैलियों, और उनके वैश्विक प्रभाव पर विस्तृत प्रकाश डालता है।

1. प्राचीन काल में संगीत का प्रारंभ

प्राचीन भारतीय संगीत परंपरा का जन्म वेदों से हुआ था। वेदों के सामवेद में संगीत का उल्लेख प्रमुख रूप से मिलता है। यह संगीत मुख्य रूप से धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञों और साधनाओं से जुड़ा हुआ था। प्राचीन काल में भारतीय समाज में संगीत एक आध्यात्मिक गतिविधि के रूप में देखा जाता था, जो आत्मा की शुद्धि और भगवान की प्राप्ति के लिए आवश्यक था। पंजाब, जो भारतीय उपमहाद्वीप का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इस संगीत परंपरा का एक अभिन्न अंग बन गया।

पंजाब का प्राचीन संगीत धार्मिक उत्सवों और अनुष्ठानों का हिस्सा था। इन संगीत रचनाओं में सामवेद

की तान और ताल का उपयोग किया जाता था। यह संगीत उस समय के धार्मिक ग्रंथों और मंत्रों के गायन का माध्यम था। पंजाब के लोग इस संगीत के माध्यम से अपने देवताओं की पूजा करते थे। इसके अतिरिक्त, पंजाब की भूमि पर शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति और विकास हुआ, जिसे विभिन्न रागों और तालों में व्यक्त किया गया।

2. मध्यकालीन संगीत परंपराएँ

मध्यकालीन पंजाब में संगीत का एक नया रूप देखने को मिला। इस समय पंजाब में सूफी संतों का बड़ा प्रभाव था। सूफी संगीत का विकास भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ था, और विशेष रूप से पंजाब में इसका काफी प्रभाव था। सूफी संतों ने भक्ति संगीत को एक साधना और आत्मा की शुद्धि का माध्यम बनाया। सूफी संगीत

में शब्द, कव्वाली और गीतों का समावेश था, जिन्हें लोग धार्मिक भावना से गाते थे।

गुरु नानक देव जी, जिन्होंने सिख धर्म की नींव रखी, ने भी संगीत का महत्त्व बताया। गुरु नानक जी ने अपनी वाणी को संगीतबद्ध किया और शब्द की रचनाओं के माध्यम से सिखों को धार्मिक संदेश दिया। इन शब्दों में संगीत का एक प्रमुख स्थान था, क्योंकि गुरु नानक जी मानते थे कि संगीत के माध्यम से भगवान की कृपा प्राप्त की जा सकती है। गुरु ग्रंथ साहिब में जो रचनाएँ संकलित हैं, वे शास्त्रीय रागों पर आधारित हैं और इन्हें संगीत के माध्यम से गाया जाता है।

इस समय में कव्वाली का भी काफी प्रचलन था, जो पंजाब के सूफी संतों द्वारा किया जाता था। कव्वाली एक धार्मिक संगीत शैली थी, जिसमें प्रेम, भक्ति, और भगवान के साथ एकात्मता की भावना व्यक्त की जाती थी। पंजाब में सूफी संगीत की शैलियाँ लोगों के दिलों को छूने वाली थीं, और यह संगीत आम जनजीवन का हिस्सा बन गया था।

3. पंजाबी शास्त्रीय संगीत का विकास

पंजाबी शास्त्रीय संगीत भारतीय संगीत परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। इस संगीत में राग, ताल, और सुरों का आदान-प्रदान होता है। पंजाबी शास्त्रीय संगीत की कई शैलियाँ रही हैं, जिनमें ख्याल, दादरा, ठुमरी, और टप्पा प्रमुख हैं। पंजाबी शास्त्रीय संगीत ने भारतीय संगीत की शास्त्रीय परंपराओं को न केवल संरक्षित किया, बल्कि उन्हें नया रूप भी दिया।

पंजाबी संगीत में रागों का एक अहम स्थान है। राग, संगीत की वह संरचना है, जो व्यक्ति के मन, हृदय और आत्मा पर गहरे प्रभाव डालती है। पंजाबी संगीत में रागों का उपयोग संगीतकारों और गायकों द्वारा किया जाता है। यह रागों का चयन मौसम, समय, और अवसर के अनुसार किया जाता है। पंजाबी शास्त्रीय संगीत में ताल का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जो संगीत की लय और गति को नियंत्रित करता है।

इसके अलावा, पंजाबी लोक संगीत ने भी शास्त्रीय संगीत को प्रभावित किया। पंजाबी लोक संगीत में लोक गीतों और धुनों का विशेष स्थान है। यहां के गीतों में पंजाब की सामाजिक और सांस्कृतिक धारा का चित्रण होता है। पंजाब के प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतकारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, और उनका कार्य आज भी भारतीय संगीत के पटल पर प्रमुख स्थान रखता है।

4. पंजाबी लोक संगीत

पंजाबी लोक संगीत पंजाब की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। यह संगीत पंजाब के किसानों, मजदूरों, और ग्रामीण समाज के जीवन से जुड़ा हुआ है। पंजाबी लोक संगीत में मुख्य रूप से भांगड़ा, गिद्दा, धोमल, और लोक गीत आते हैं। भांगड़ा, जो आज दुनियाभर में प्रसिद्ध हो चुका है, एक नृत्य संगीत शैली है, जिसे विशेष रूप से कृषि पर्वों के दौरान गाया और नाचा जाता है।

भांगड़ा एक जोशीला और उत्साही नृत्य है, जिसे पंजाबी युवा पुरुष बड़े आनंद से करते हैं। इसके गानों में उत्सव, खुशी, और मेहनत की भावना व्यक्त की जाती है। गिद्दा, जो विशेष रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है, भी एक महत्वपूर्ण लोक नृत्य है। गिद्दा में महिलाओं का समूह पारंपरिक गीतों के साथ नृत्य करता है, जो पंजाब की सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाता है।

लोक गीतों में पंजाब के विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया जाता है, जैसे प्रेम, युद्ध, खेतिहर जीवन, और लोक त्योहार। इन गीतों के माध्यम से पंजाब के लोग अपनी भावनाओं, संघर्षों, और जीवन की कठिनाइयों को व्यक्त करते हैं। लोक संगीत में सामूहिक भागीदारी और सामाजिक एकता का संदेश होता है।

5. आधुनिक पंजाबी संगीत

आधुनिक पंजाबी संगीत ने पंजाबी फिल्म उद्योग और भारतीय फिल्म उद्योग से बहुत प्रभावित हो कर अपना नया रूप लिया है। विशेष रूप से 20वीं शताब्दी

के उत्तरार्ध में पंजाबी संगीत में बड़े बदलाव आए। पंजाबी फिल्म उद्योग ने संगीत को एक नया रूप दिया और इसके माध्यम से पंजाबी गाने को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। पंजाबी पॉप संगीत, जिसे 'पंजाबी म्यूजिक' कहा जाता है, ने युवाओं को आकर्षित किया और यह संगीत शैली विश्वभर में लोकप्रिय हो गई।

पंजाबी गायक जैसे दलेर मेहंदी, सुखबीर, और बादशाह ने पंजाबी संगीत को एक नई दिशा दी है। इन कलाकारों के गाने न केवल पंजाब में, बल्कि भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में भी लोकप्रिय हो गए हैं। पंजाबी पॉप संगीत में एक नया जोश और ऊर्जा है, जिसे खासकर युवा पीढ़ी में बहुत पसंद किया जाता है।

इसके अलावा, पंजाबी रैप संगीत भी युवा वर्ग में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। रैप गीतों में पंजाबी भाषा और संस्कृति का समावेश होता है, और यह एक नई तरह की संगीत शैली है जो आधुनिक पंजाबी संगीत का हिस्सा बन गई है।

6. पंजाबी संगीत का वैश्विक प्रभाव**

पंजाबी संगीत का प्रभाव न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में महसूस किया जाता है। विदेशों में बसे पंजाबी समुदाय ने पंजाबी संगीत को एक नई पहचान दी है। पंजाबी गाने, विशेष रूप से भांगड़ा और पॉप संगीत, ब्रिटेन, कनाडा, और अमेरिका में बहुत लोकप्रिय हो चुके हैं। पंजाबी संगीत के गाने आजकल अंतरराष्ट्रीय संगीत चार्टर्स में भी आते हैं, और कई पंजाबी गायक वैश्विक स्तर पर सम्मानित हो रहे हैं।

पंजाबी संगीत की लोकप्रियता को देखते हुए अंतरराष्ट्रीय संगीत उद्योग ने भी पंजाबी संगीत को स्वीकार किया है। कई प्रसिद्ध पश्चिमी कलाकारों ने पंजाबी गानों के साथ सहयोग किया है, और इसके माध्यम से पंजाबी संगीत को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है।

निष्कर्ष

पंजाबी संगीत का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यह संगीत न केवल पंजाब की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है, बल्कि भारतीय संगीत की शास्त्रीय परंपरा को भी जीवित रखता है। पंजाबी संगीत ने लोक जीवन, धार्मिक भावना, और सामाजिक एकता को व्यक्त किया है। आज, पंजाबी संगीत ने वैश्विक स्तर पर पहचान बनाई है और यह विभिन्न शैलियों के माध्यम से समृद्ध हो रहा है। पंजाबी संगीत की यह यात्रा एक समृद्ध और गौरवपूर्ण इतिहास को दर्शाती है, जो समय के साथ और भी विकसित हो रही है।

संदर्भ:

1. *पंजाबी संगीत का इतिहास* - हरविंदर सिंह
2. *संगीत शास्त्र और लोक संगीत* - बलविंदर कौर
3. *भारतीय संगीत परंपरा* - प्रमोद शर्मा
4. दीपक कुमार (2018). पंजाबी सूफी संगीत और संस्कृति. लुधियाना: पंजाब कला अकादमी.
5. शर्मा, आर. (2022). *भारतीय संगीत का इतिहास.* दिल्ली: नेशनल पब्लिशर्स।
6. सिंह, जे. (2019). *पंजाब की सांस्कृतिक विरासत.* चंडीगढ़: पंजाब यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. विभिन्न ऑनलाइन स्रोत।